- पाँचवाँ अध्याय -

"निमिषा" उपन्यास में चित्रित समस्याएँ

मनुष्य सामाजिक प्राणी है । समाज में रहने के नाते उसे सामाजिक आचार-व्यवहारों का पालन करना पडता है । समाज में रहते हुए उसे कई तरह की समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है । साहित्यकार समाज में ही घटित होनेवाली घटनाओं को अपनी कल्पनाशक्ति के सहारे प्रस्तुत करता है । ऐसा करते समय समाज की, समाज के लोगों की व्यक्तिगत समस्याओं का भी चित्रण वह करता है । संवेदनशील साहित्यकार सिर्फ समस्याओं का चित्रण कर ही नहीं सकता तो वह हल भी प्रस्तुत करने का प्रयास करता है । उपेंद्रनाथ अश्क जी भी एक संवेदनशील साहित्यकार होने के नाते आप भी इस नियम के लिए अपवाद नहीं है। उन्होंने अपने साहित्य में कई समस्याओं का न सिर्फ चित्रण किया है, बल्कि उसका हल भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । हर एक वर्ग की, अलग-अलग प्रकार की समस्याएँ होती हैं, उनमें से अनेक समस्याओं का चित्रण उपेंद्रनाथ अश्क जी के उपन्यास "निमिषा" में हम पाते हैं । "निमिषा" उपन्यास में चित्रित समस्याओं को हम निम्नलिखित भागों में बाँट सकते हैं -

१] राजनीतिक समस्याएँ ।
२] सामाजिक समस्याएँ ।
३] धार्मिक समस्याएँ ।
४] आर्थिक समस्याएँ ।

राजनीतिक समस्याएँ :-

साहित्यकार समाज का एक प्रतिनिधि है और वह अपनी साहित्य कृतियों में जीवन की व्याख्या करता है । साहित्य और राजनीति एक-दूसरे के पूरक हैं । मनुष्य की भावना से राजनीति की जड़े-जुड़ी रहती हैं । इसी

वजह से जीवन के हरक्षेत्र में राजनीति व्याप्त रहती है । इस संदर्भ में डा. कमला गुप्ता ने लिखा है - "स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात व्यक्ति की राजनीतिक चेतना विविध स्वार्थी प्रवृत्तियों के रूप में प्रस्फुटित हुई । सदा के लिए आपा-धापी ने राजनीतिक भ्रष्टाचार को जन्म दिया । भ्रष्टाचार के कारण प्रत्येक व्यक्ति निम्न और उच्च स्तरपर सत्तात्मक राजनीति की शतरंज में अपनी गोटी बैठाने के प्रयत्न में संलग्न हो गया । व्यक्तिगत स्वार्थोंने दलबदलू राजनीति को जन्म दिया । राजनीतिक दलों ने नेता एक के बाद दूसरा दल बदलते रहे । स्वतंत्रता पूर्व भारतीय जनता के जो सपने संजोए थे वे धराशायी हो गये । राजनीतिक हत्याएँ, घेराव, हड़ताल, बंद और तथाकथ प्रवृत्तियाँ राजनीतिक अभिशाप के रूप में सामने आयी । "[१] स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व राजनीतिज्ञों की स्थिति इतनी दयनीय नहीं थी । वे स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अंग्रेजों से लड़-झगड़ रहे थें । उनमें वैचारिक मतभेद चाहे जितने भी क्यों न हो, उनका उद्देश्य एक ही था और वह था - स्वतंत्रता प्राप्ति । परंतु जैसे ही भारत को आजादी मिली वैसे ही इन राजनेताओं ने अपनी दलबदलू वृत्ति दिखायी और अपनी जेबें भरने का काम शुरु किया। आजतो स्थिति यह आ गयी है कि सामान्य लोग हो या राजनेता हो पूरी तरह से भ्रष्ट हो चुके हैं । अपना स्वार्थ साधने के लिए वे कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाते हैं । राजनेताओं की इस प्रवृत्ति का असर आजकल सामान्य व्यक्तियों पर पड़ा हुआ हमें दिखाई देता है ।

साहित्यकारों ने अपनी साहित्य कृतियों में इन राजनीतिपर काफी व्यंग्य किया है जिसे आज भ्रष्टाचार का पर्याय मान लिया जाता है । आधुनिक काल में तो कम ही साहित्यकार ऐसे होंगे जिन्होंने अपनी रचनाओं में राजनीति का वर्णन नहीं किया हो या सामान्य लोगों के जीवन में राजनीति [भ्रष्टाचार] ने किस प्रकार अपनी जड़े जमा ली हैं ।

---

१. डा. कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामन्तवाद,
पृष्ठ - १७६ ।

उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अपने उपन्यास "निमिषा" में अधिकतर पात्रों के मन का विश्लेषण ही अधिक किया है परंतु उन्होंने शिक्षा संस्थाओं में चल रही राजनीति के बारे में बताकर वहाँ भी आजकल भ्रष्टाचार ने अपने कदम किस तरह फैलाए हैं, इसका वर्णन किया है। "निमिषा" में चाहे अत्यल्प मात्रा में उन्होंने राजनीतिक समस्या को क्यों न दिखाया हो, लेकिन उन्होंने उसकी उपेक्षा नहीं की है।

"निमिषा" उपन्यास का गोविन्द एक चित्रकार एवं शायर है। वह अपनी आर्थिक स्थिति से तंग आ चुका है। उसकी प्रथम पत्नी लक्ष्मी बिमारी के बाद मर चुकी है और उसे एक बेटा भी है। उसे अमृतसर जिले में होनेवाले पत्थरचट्टी के निकट बसाए गए देवनगर में आर्ट टीचर की नौकरी मिल जाती है। लेकिन स्थिति यह है कि पहले उसे लाहौर में सिर्फ एक हेड मास्टर को खुश करना पड़ता था क्योंकि मैनेजिंग कमेटी से वे ही सुलटते थे लेकिन आज उसे सोसाइटी के अठारहों मेम्बरों को खुश करना पड़ता है। यहाँ प्रसिद्ध समाज-सुधारक देवाजी एक आदर्श नगर की स्थापना कर रहे हैं। यहाँ के वासी जाति-पाँति और भेदभाव से दूर, सुंदर और स्वच्छ वातावरण में मित्र और प्रेम-भाव से रहेंगे, जहाँ कोई किसी से नफरत नहीं करेंगा, सब एक-दूसरे को आगे बढ़ाने की कोशिश करेंगे, जहाँ प्रेम के मार्ग में कोई दीवार न होगी, जहाँ स्कूल के बच्चों को आत्म-निर्भर रहना, दस्तकारी और कला कौशल में रुचि लेना सिखाया जाएगा और देवनगर के आदर्श में विश्वास रखनेवाले, रिटायर्ड होने के बाद, जहाँ अपना समय बडे ही अच्छे वातावरण में सुख-शान्ति चिन्तन और मनन में गुजार सकेंगे। लेकिन यह तो सिर्फ उपरी दिखावा है। ये संस्थापक पक्के व्यवसायी हैं। यहाँ इस नगर में उजड़ी जागीर बहुत ही कम दामों में खरीद ली और अब यहाँ उपर्युक्त बातों में लोगों को बहलाकर सभी प्रकार के प्लॉट बना दिए जाते हैं और उन्हें महँगे दामों पर देवसैनिक बेच रहे हैं। वहाँ पर अभी भी जाति-पाँति तथा भेदभाव मौजूद है। गोविन्द बताता है - "परकोटे से बनी कोठियों की उस पंक्ति में मध्य की पूरी कोठी देवाजी के पास थी, शेष कोठियों में से हरेक में दो-दो, तीन-तीन देवसैनिक निवास करते थे। नौकरों और प्रेस में काम करनेवालों

के लिए दूर क्वार्टर बना दिए गए थे । देवसैनिक कोठियों के आगे खुले मैदान में बनी कोर्ट में बैडमिण्टन खेलते थे और कर्मचारी अपने क्वार्टरों के आगे वालीबॉल । और यूँ जात-पाँत, भेद-भाव वहाँ बदस्तूर बना हुआ था, यद्यपि ऊपर से दिखायी न देता था । " [१] इस प्रकार हम यह देखते हैं कि देवा मानो कोई राजनीतिज्ञ ही है और उनके द्वारा किया गया यह पॉलिटिक्स [भ्रष्टाचार] भी राजनीति का एक अलग ही रूप हमारे सामने लाता है । आजकल संस्थाओं में भी किस प्रकार भ्रष्टाचार चल रहा है, इस बात को यहाँ स्पष्ट किया गया है ।

इस प्रकार हम देखते हैं देवनगर को निर्माण करने के लिए जो संस्था देवाने बनायी थी उसकी राजनीति कैसी है, इस बात का वर्णन इस उपन्यास में किया गया है ।

सामाजिक समस्याएँ :-

व्यक्ति समाज का एक अभिन्न हिस्सा होता है । सामाजिक हर एक व्यक्ति का यह परम कर्तव्य बन जाता है कि वह सामाजिक बंधनों का, समाज के नियमों का पालन करें । समाज में रहते हुए जो कठिनाइयाँ उसके सामने आए उन सभी का उटकर मुकाबला करें । समाज में जो कठिनाइयाँ व्यक्ति महसूस करता है, उसे सामाजिक समस्याएँ कहते हैं । ये समस्याएँ आमतौरपर व्यक्तिगत नहीं होती । ये पूरे समाज की होती हैं । समाज के सभी वर्गों के लोग इसे महसूस करते हैं । समाज की सभी समस्याओं में से कुछ सामाजिक समस्याओं को उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अपने उपन्यास "निमिषा" में चित्रित किया है ।

अंतर्जातीय विवाह की समस्या :-

आधुनिक काल में जैसे-जैसे शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो रहा है, वैसे-वैसे निम्न जातियों की ओर देखने का समाज का नजरिया बदलता जा रहा है ।

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - २४५ ।

इसी वजह से सभी जातियाँ एक दूसरे के अत्यंत निकट आ रही है । आपसी भेद-भाव बहुत कम हो रहा है । इसलिए आंतरजातीय विवाह की संस्था भी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है । इसी समस्या का चित्रण उपेंदनाथ अश्क जी ने अपने उपन्यास "निमिषा" में किया है । इस उपन्यास की नायिका "निमिषा" के एक्वोकेट चाचा उनके पास आनेवाली एक जागिरदारिनी की सुंदर कन्या रुपिन्दर और के साथ प्यार करते हैं । लेकिन वह चुपचाप शादी करना चाहती है और वे अपने मुवक्किल को धोखा नहीं दे सकते और जब वह भागकर उनके पास आते हैं तो वे उससे कहते हैं - "वे उससे प्यार करते हैं, शादी भी करने को तैयार है, लेकिन वे चोरी-छिपे ऐसा नहीं कर सकते । वह अपनी माँसे कहे । "[1] एक तो वह जाति से सिक्ख है, ऊपर से जागिरदारिनी की कन्या और उसकी सगाई हो चुकी है, ऐसी स्थिति में कोई भी उसकी बात नहीं मान सकता यह वह बताती है । अर्थात समाज से डरकर वे दोनों अंतर्जातीय विवाह नहीं कर सकते । प्यार को समाज के डर पर बली दी जाती है ।

इस प्रकार उपन्यास के नायक गोविन्द की पहली पत्नी मर चुकी है और वह न चाहते हुए भी एक स्कैण्डल से डरकर दूसरी जगह सगाई कर लेता है । लेकिन इसी बीच उसके जीवन में निमिषा आ जाती है और फिर वह जहाँ सगाई हुई है वह तोड़कर निमिषा से शादी करना चाहता है । उसके भाईसाहब कहते हैं - "यह सब पहले सोचना था । मैं तो सगाई करता नहीं था। इसी इसी ने जोर दिया था । अब रिश्तेदारों में बात की है । यह जात के बाहर शादी करना चाहता है । अगर ताव खा कर ओम के ससुरालवाले सगाई तोड़ दें तो। "[2] अर्थात यहाँ भी समाज का डरही सामने आ जाता है । अधिकतर आंतरजातीय विवाह शायद इसी वजह से हो नहीं पाते हैं । क्योंकि व्यक्ति अकेला चाहे जितना समर्थ क्यों न हो, समाज के डर के सामने वह निढ़ाल-सा बन जाता है और इसी वजह से ऐसे विवाह नहीं हो पाते ।

इस प्रकार उपेंद्रनाथ अश्क जी ने विवाह समस्या के माध्यम से समाज का डर कैसा होता है, इस बात का चित्रण किया है ।

-

१. उपेंद्रनाथ अश्क-निमिषा, पृष्ठ - ३० ।

२. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ३० ।

अनमेल विवाह :-

जहाँ पति और पत्नी में मेल न हो, उसे अनमेल विवाह कहा जा सकता है। यह मेल जाति के संम्बध में हो सकता हैं, आयु के संबंध में हो सकता है, आर्थिक स्थिति के संबंध में हो सकता है अथवा सुंदरता के संबंध में हो सकता है या शारीरिक स्थिति के सम्बन्ध में भी हो सकता है। इनमें से किसी एक का भी मेल न बैठे तो उसे अनमेल विवाह कहा जा सकता है। उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अपने उपन्यास "निमिषा" में गोविन्द और उसकी पत्नी माला का वर्णन किया है। इन दोनों का तो किसी भी तरिके से मेल नहीं बैठता। एक तो गोविन्द एक चित्रकार एवं कवि है। उसमें शारीरिक दृष्टि से देखा जाए तो किसी भी प्रकार की कमी नहीं है लेकिन उसे माला मिलती है। वह सिर्फ मैट्रिक की परीक्षा पास की है और किसी भी कला में कोई रुचि नहीं है। इन बातों को भी गोविन्द भूल जाता अगर वह सुंदर और गुणी होती। लेकिन उसका चेहरा तो ऐसा है कि देखते ही एक विरक्ति-सी मन में जागृत होती है। उसके साथ-ही-साथ वह अत्यंत ही फूहड़, निर्लज्ज और शारीरिक दृष्टि से अत्यंत ही भूखी स्त्री है। इन सभी बातों से अत्यंत नाराज हुए गोविन्द को या तो निमिषा की याद आती है जिसके साथ वह ब्याह करना चाहता है, या फिर पहली पत्नी लक्खी कीयाद आती है, जिसे वह जल्दी समझ नहीं पाया था।

इस प्रकार उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अनमोल विवाह समस्या क चित्रंण कर उसके परिणामों को दर्शाने की कोशिश की है।

विवश नारी :-

आधुनिक काल में हम देखते हैं कि समाज चाहे जितना पढ़ा-लिखा हो, कई तरह के सुधार इस समाज में हो फिर भी समाज की मानसिकता, पुरुषों का समाज में अधिपत्य आज भी उसी प्रकार बना रहा है जैसा प्राचीन काल में था। इसलिए आज भी नारी चाहे नौकरी करनेवाली हो या अनपढ़ हो सभी को

पुरुष के द्वारा लिए गए निर्णय ही मान्य करने पड़ते हैं । इसी वजह से नारी आज भी उतनी ही विवश है, जितनी पहले थी । उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अपने उपन्यास "निमिषा" में निमिषा की माँ, निमिषा, माला आदि स्त्रियों के माध्यम से नारी की विवशता के अलग-अलग रूप दिखाएँ हैं ।

निमिषा के पिता मिलिट्री एकाउँटेण्ट हैं और त्रिवेंद्रम की छावनी में काम करते हैं । वहाँ की जल-वायु और खान-पान पसंद न आने के कारण निमिषा की माँ को आँतों की शिकायत रहने लगती हैं । महिनों उसका इलाज किया जाता है परंतु कोई उपाय न देखकर अंग्रेज सर्जन को दिखाया जाता है और वह आँतों का यक्ष्मा है कहकर तुरंत ऑपरेशन की सलाह देता है । माँ तो तैयार हो जाती है परंतु जान का खतरा देख पिता अचानक ऑपरेशन के दिन ही कहने लगते हैं - "मैं तुम्हारी जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकता । तुम जितने दिन भी रहो, मेरे सामने रहो ।"[1] अगर वहीं उसका ऑपरेशन हो जाता तो शायद वह बच जाती लेकिन भयानक संघर्ष करती हुई वह चली जाती है और उसके पहले ही निमिषा के पिता भी छुट्टी खत्म हो जाने के कारण चले जाते है, वहीं वे भी मर जाते हैं । यहाँ निमिषा के माँ की विवशता यह है कि वह अपने पति द्वारा लिए गए ऑपरेशन न कराने के निर्णय के आगे सर झुका लेती है । इसकी वजह से उसे आजीवन कितनी तकलिफ उठानी पड़ती है ।

निमिषा तो बचपन से ही अत्यंत विवश रही है । माता-पिता ने हमेशा उसे लाड़-प्यार से पाला लेकिन उनके गुजर जाने के पश्चात तो उसकी स्थिति किसी शटलकॉक की तरह हो गयी । उसे इस मामा के घर से उस मामा के घर में फेंका जाने लगा । इसी वजह से जब वह चाचा के घर में रहने आयी तो उसकी स्थिति सुधर गयी लेकिन जब उसके चाचा की शादी हो गयी तो चाची के द्वारा उसे हमेशा ही ताने सुनने पड़ते हैं । इसी वजह से वह और भी दुःखी हो जाती है । चाची के द्वारा की जानेवाली उपेक्षा के कारण प्रथम श्रेणी की छात्रा होनेवाली निमिषा बी.एड्. में बस पास हो जाती है । वह जिस

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - २० ।

गोविन्द से प्रेम करती है उसके साथ वह पहले पहचान न होने के कारण बोल भी नहीं पाती । उसका दुर्भाग्य तो यह भी है कि जिसे वह चाहती है, उसके साथ वह शादी भी नहीं कर पाती है । उसकी विवशता तो अधिकतर प्रेम करनेवाली युवती की विवशता हो सकती है ।

माला एक मध्यवर्गीय परिवार की लड़की है । वह अत्यंत ही कुरूप है और उसे कोई सलीका भी नहीं है । वह भी अपनी कुरूपता के कारण अत्यंत ही विवश दिखाई देती है । एक तो पहले से ही नाराज गोविन्द उसे देखकर और भी अधिक नाराज होता है । यह देखकर उसे अपनी विवशता, अपनी मजबूरी पर गुस्सा आता है । लेकिन उसे तो अधिक गुस्सा इस बात से है कि गोविन्द किसी दूसरी औरत से प्यार करता है ।

इस प्रकार उपेंद्रनाथ अश्क जी ने नारी की विवशता के अलग-अलग पक्षों को अलग-अलग रूप से चित्रित किया है । आजकल भी नारी किस प्रकार विवश है, इस बात का पता हमें चलता है ।

तलाक :-

उपेंद्रनाथ अश्क जी ने आधुनिक काल में प्रचलित कई सामाजिक समस्याओं की तरह ही एक अत्यंत ही प्रबल रूप से चलनेवाली समस्या तलाक समस्या अथवा विवाह विच्छेद की समस्या का चित्रण भी किया है । उन्होंने अपने "निमिषा" उपन्यास में सिर्फ इस समस्या का ही चित्रण नहीं किया है तो साथ ही उसका एक पात्र के माध्यमसे समाधान भी प्रस्तुत करना चाहा है ।

आजकल समाज में अधिकतर पति-पत्नी संबंधों में किसी-न-किसी वजह से तनाव आ जाता है । कभी पत्नी के प्रति पति का शक आड़े आ जाता है तो कभी आर्थिक कारण आड़े आता है, कभी दहेज का कारण आड़े आ जाता है तो कभी पुरुषी अहं सामने आ जाता है । लेकिन उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अपने

उपन्यास "निमिषा में जिस प्रकार की समस्या का चित्रण किया है, वह तो अलग ही प्रकार की है । इस उपन्यास का नायक "गोविन्द" अपनी पत्नी माला की वजह से त्रस्त हो चुका है । एक तो उसकी पहली पत्नी मर चुकी है, ऊपर से वह निमिषा से प्यार भी करता है और उसी को दिल के कारण सगाई हो जाने के कारण उसे माला से ब्याह करना पड़ा है । ऊपर से उसे जिस प्रकार बताया जा चुका है, वैसी माला सुंदर भी नहीं है । इसी वजह से वह उससे पहले ही तंग आ चुका है और माला को कोई सलीका नहीं है, उसमें अच्छा गुण नहीं है और वह शारीरिक दृष्टि से अत्यंत भूखी नारी है । इसी वजह से वह माला को अपनी नौकरी की जगह देवनगर में जाकर एक खत लिखता है जिसमे वह उससे तलाक चाहता है, यह बताता है और वह उसे उसकी सहेली मधुमति की तरह का आचरण करने के लिए कहता है । माला की सहेली मधुमति ने अपने पति से तंग आकर संबंध विच्छेद कर लिया है । गोविन्द अपनी पत्नी से खत में लिख दिया है - "माला क्या इस वस्तुस्थिति से पार पाने का कोई रास्ता नहीं ? मेरे पत्र को ध्यान से पढ कर तुम जरा मन को टटोलो । क्या तुम में जरा भी हिम्मत या हौसला नहीं, क्या तुम एक्टर महेंद्र की पत्नी की तरह जिंदगी बर्बाद करने के बदले मधुमति की तरह समाज और जिंदगी से अपनी कीमत वसूल नहीं कर सकती ? क्या बे-रस वैवाहिक जीवन के मुकाबले में, मधुमति की - सी स्वतंत्र और सत्कार-भरी जिंदगी तुम्हें पसंद नहीं ?" [1] लेखक उपेंद्रनाथ अश्क जी ने गोविन्द के इस पत्र के माध्यम से एक उपाय तो प्रस्तुत कर दिया है परंतु हम देखते हैं कि उसकी पत्नी इस बात को स्वीकार नहीं करती । वह फिर-भी उसी के पास चली आती है और फिर उसे और अधिक तंग करती है । हम यह कह सकते है कि कोई भी भारतीय स्त्री इस प्रकार के प्रस्ताव को कभी स्वीकार नहीं कर सकती क्योंकि बचपन से ही उन्हें सीखाया जाता है कि, पति का घर ही उसका सही घर है । और संबंध विच्छेद करनेवाली स्त्री पापी होती है । इसलिए उनके द्वारा किया गया यह तलाक समस्या का समाधान अत्यल्प मात्रा में प्रयोग में लाया जानेवाली है । लेकिन हम यह कह सकते हैं कि लेखक ने अपनी ओर से उसका क्या समाधान हो सकता है, इसपर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं ।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - २६३ ।

अत: हम यह कह सकते है कि सामाजिक समस्याओं के कई अंगों को लेखक ने अपने उपन्यास "निमिषा" में प्रस्तुत किया है ।

आर्थिक समस्याएँ :-

वैसे देखा जाए तो पैसा ही मनुष्य के सुख तक पहुँचने की राह का उत्तम साधन नहीं है परंतु आधुनक काल में पैसे के बलपर समाज दो वर्गों में विभाजित हो गया है । पहला वर्ग याने अमीर वर्ग या उच्च वर्ग जिसे प्राचीन काल में शोषक कहा जाता था । और दूसरा वर्ग गरीब वर्ग या निम्न वर्ग जिसे प्राचीन काल में शोषित कहा जाता था । आज इन दोनों के बीच का एक वर्ग जो औद्योगिक क्रांति की देन है, तैयार हो रहा है, मध्यवर्ग । इन वर्गों में से अमीर वर्ग को आर्थिक समस्या निर्माण होने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता । लेकिन मध्यवर्ग और गरीब वर्ग या निम्न वर्ग आर्थिक समस्याओं के चपेट में आता रहा है । इस आर्थिक विषमता के कारण सिर्फ मध्यवर्ग ही स्थिर स्थ में रहता है और उच्च वर्ग के स्वप्ने देखता है । करीब और गरीब होना चला जा रहा है । इसमें कई तरह की समस्याएँ आती हैं ।

उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अपने उपन्यास "निमिषा" में आर्थिक संपन्नता के बावजूद सुखी न होनेवाले परिवार का जिस प्रकार चित्रण किया है, उसी प्रकार अर्थाभाव की समस्या का चित्रण भी किया है । बेरोजगारी की समस्या का चित्रण भी उन्होंने अपने उपन्यास में किया है ।

संपन्नता के बावजूद भी दु:खी :-

कई बार ऐसा होता है कि मनुष्य के पास ढेर-सारी साधन-संपन्नता होती है लेकिन फिर भी वह सुखी होता ही है, ऐसी बात नहीं । "निमिषा" उपन्यास में "निमिषा" के माता-पिता भी अत्यंत साधन-संपन्न है लेकिन जब

"निमिषा" की माँ को आँतों का कैन्सर हो जाता है, तब से उनकी स्थिति बिगड़ने लगती है। जब वे नौकरीपर जाने लगते हैं तो अपनी पत्नी के खयाल से बिमार पड़ जाते हैं और मर जाते हैं। उसके पिता की मौत के बाद उसकी माँ भी महीने भर बाद चल बसती है। चाहे कितनी भी साधन-संपन्नता हो वे कभी सुखी नहीं बन पाते।

निमिषा को बचपन से ही अभावग्रस्त जिंदगी बितानी पड़ती है। उसके माता-पिता के मृत्यु के बाद उनका पैसा उसे नहीं मिल पाता। उसे इस माता के घर से उस मामा के घर तक हमेशा ही फेंका जाता था। इसी वजह से उसकी पढ़ाई भी ठीक से नहीं हो पाती। जब वह चाचा के पास रहने आती है तो उसकी पढाई ठीक होने लगती है। लेकिन जब उसकी चाची आती है तो वह हमेशा उस पर निगरानी रखती है। जब निमिषा बिना गोविन्द का नाम लिये शादी की बात चलाती है तो चाची उसे आसानी से शादी करने के लिए कह देती है यहाँ तक कि वह चाचा को मनाने की बात भी करती है। जब इसके बारे में निमिषा सोचती है - "चाची क्यों न पसंद करेंगी कि वह खुदही कही शादी कर ले, ताकि उन्हें शादी में एक पैसा भी न खर्च करना पडे।"[१] निमिषा का मन कडुवाहट से भर जाता है। यहाँ चाची की स्वार्थ भावना हमें दिखाई देती है।

दूसरी ओर एडवोकेट खन्ना भी एक साधन-संपन्न व्यक्ति है। लेकिन वे जिसे चाहते है उसके साथ शादी नहीं कर पाते और जिस रिश्ते को वे टाल रहे है उसी लडकी से शादी कर लेते हैं। लेकिन यह अधपढ, फूहड, छोटे दिल की, ओछे स्वभाव और फूहडना को फैशन में छिपानेवाली, सलीके से कोसों दूर ऐसी औरत है जिसे होटलों में खाना, हर तीसरे दिन सिनेमा देखना और देरतक सोना पसंद है। चीजों का सही इस्तेमाल भी वह नहीं जानती है। इसी वजह से उसके चाचा बहुत दु:खी होते है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - १६४।

इस प्रकार हम यह देखते है कि साधन-संपन्नता होने के बावजूद भी कभी-कभी मनुष्य सुखी होगा ही ऐसी बात नहीं है ।

अर्थाभाव :-

मनुष्य अन्य सारे ढोंग कर सकता है परंतु वह कभी भी अर्थ का ढोंग नहीं कर सकता । जिस मनुष्य को अर्थाभाव सताता है उसकी स्थिति अत्यंत ही दयनीय बन जाती है । संकोच के कारण न वह अपनी स्थिति किसी के सामने प्रकट कर सकता है और न वह उसे छिपाकर रख सकता है क्योंकि वह सामने आ ही जाती है । उपेंद्रनाथ अश्क जी के उपन्यास का प्रमुख पात्र गोविन्द भी एक ऐसा व्यक्ति है कि जो एक उत्कृष्ठ चित्रकार है और साथ-ही-साथ वह कविताएँ भी करता है । लेकिन वह जिस गली में रहता है और जिस प्रकार के घर में रहता है उसे देखकर कनक जैसी उच्चवर्गीय लड़की अपने विचार प्रकट करते हुए कहती है - "पुरानी अनारकली में गोपाल ढाबे के पास जो गली है न धोबियों वाली, उसी के दूसरे चौक में है । स्टूडिओ तो क्या, एक छोटे-से नीम अंधेरे बैठक में उसने ईजल सजा रखा है । " [१] चाहे कनक उसके चित्रकारी की कायल रही हो, फिर भी वह उसके परिवेश को लेकर कई व्यंग्यपूर्ण टिप्पनियाँ प्रस्तुत करती है । जब निमिषा गोविन्द के साथ कनक का प्यार है, ऐसी आशंका व्यक्त करती है, तो वह बिफर ही उठती है - "प्रेम करने के लिए क्या वह सडा टीचर ही रह गया मेने लिये, जिसे रहने को धोबियों की गली के सिवा कोई जगह नहीं मिली । मुझे उससे प्रेम नहीं । उसके चित्रों को देखकर जरूर ईर्ष्या हुई । प्रेम तो मैं सात जन्म उससे नहीं कर सकती । जिस कमरे में वह रहता है, वहाँ एक मिनट बैठना मेरे लिए दूभर हो गया । " [२] कनक की इस टिप्पणिसे गोविन्द का अर्थाभाव हमारे सामने प्रकट हो जाता है। अर्थाभाव का उच्चवर्गीय लोग कैसे मजाक उड़ाते हैं इस बात का पता हमें उपेंद्रनाथ अश्क जी के उपन्यास के पात्र के पात्र कनक से चलता है ।

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ५३ ।
२. - वही -, पृष्ठ - ५३ ।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि अर्थाभाव मनुष्य को कितना त्रस्त कर सकता है क्योंकि मनुष्य की सामान्य से सामान्य जरूरतों के लिए उसे अर्थ की सोटी आवश्यक होती है ।

महँगाई :-

जैसे-जैसे हमारे देश की लोकसंख्या में वृद्धि हो रही है, वैसे-वैसे महँगाई भी बढ रही है । इस महँगाई को रोकना अब किसी के भी हाथ में नहीं रहा है । "निमिषा" उपन्यास का नायक गोविन्द तो पहले से ही अर्थाभाव से त्रस्त है और उपर से महँगाई ने भी उसे त्रस्त कर दिया है । जब माला उसे यह बताती है कि - "मुझे लात न मारना, मैं बच्चे से हूँ । "[1] तो वह पहले तो वह हक्का-बक्का रह जाता है और बाद में वह उसे समझाने लगता है कि - "मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि मैं बच्चों को बहुत बडी लग्जरी मानता हूँ और मैं नहीं समझता ८५ रुपये महिने में मैं मन-मुताबिक अपने बच्चे का पालन-पोषण कर सकता हूँ । लक्खी ऐसे ही बच्चे से हो गयी थी । तब उसने मेथे उबाल कर पी लिए थे । दूसरी बार उसने कुनीन खा ली थी । दोनों चीजों में से तुम कोई ले लो । छुट्टी हो जाएगी । "[2] अर्थात महँगाई से वह इतना त्रस्त हो चुका है कि उसे बच्चा भी अब मानो लग्जरी लग रहा है ।

इस प्रकार आर्थिक समस्याओं से परेशान व्यक्ति किस प्रकार का बर्ताव करता है, इसका चित्रण "निमिषा" उपन्यास में उपेंद्रनाथ अश्क जी ने किया है ।

धार्मिक समस्याएँ :-

जो धारण किया जाता है, वह धर्म है इस प्रकार यद्यपि धर्म की प परिभाषा बनायी जाती हो परंतु आज कल धर्म की क्या स्थिति है इसे देखने पर -

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ३१३ ।
२. - वहीं - पृष्ठ - ३१५ ।

हमें पता चलता है कि लोगों की धर्मपर से आस्था, विश्वास टूट चुका है। धर्म के प्रति मनुष्य की जो उदात्त भावना थी, वह भी आज टूट चुकी है। आजकल पढालिखा होकर भी समाजमें कई तरह की बुरी प्रथाएँ, अंधश्रद्धा, रूढियाँ, परंपराएँ प्रचलित हैं जो उचित नहीं है। आज भी हम उनमें पूरी तरह से जकड चुके है। उपेंद्रनाथ अश्क जी ने अपने "निमिषा" उपन्यास में इन समस्याओं का चित्रण किया है।

आज भी हमारे समाज में कुछ पारंपारिक मान्यताएँ है। जैसे किस रिश्तेदार के लिए कौन-सी आयु होनी चाहिए इसके लिए कुछ नियम है। दादाजी हो तो उन्हें झुककर चलना चाहिए, धोती पहननी चाहिए। इसी प्रकार चाची हो तो वह बडी उम्रवाली होनी चाहिए। निमिषा यह देखती है कि उसकी चाची उससे केवल तीन साल बडी है। उसके चाचा उसे समझाते हैं कि वह चाची को माँ समान समझे, तो वह उसे कठिन लगता है। आज भी पारंपारिक मान्यताओं का अस्तित्व हमारे समाज में है।

हमारे समाज में कुछ संस्थार भी ऐसे होते है जो कभी-कभी लोगों को निरर्थक प्रतीत होते है, गोविन्द शादी के लिए तैयार नहीं है और इसी वजह से उसे विवाह के वक्त होनेवाली सभी रस्में जैसे - सेहरा बन्दी, बारात, यज्ञ आदि। गोविन्द उन रस्मों को कैसे निभा रहा है, इसका वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है - "लेकिन अपनी दुल्हन का हाथ देखने के बाद उसका मन कुछ ऐसा बुझ गया था कि सचेत होने के बावजूद वह जड बना रहा था और उसी मशीनी ढंग से मजाक सुनता और हँसता-हँसता और सभी रस्मों में योग देता रहा था।" [1] इस प्रकार त्रस्त जो जाने के कारण विवाह के समय पण्डित ने क्या कहा इसकी ओर भी उसका ध्यान न रहा।

इस प्रकार उपेंद्रनाथ अश्क जी ने विवाह संस्कारों की निरर्थकता और पारम्पारिक मान्यताओं की वजह से निर्माण होनेवाली धार्मिक समस्याओं का चित्रण निमिषा उपन्यास में कर दिया है।

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - १९३।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि उपेंद्रनाथ अश्क जी संवेदनशील साहित्यकार हैं। संवेदनशील साहित्यकार होने के नाते उन्होंने समाज में रहते हुए समाज की समस्याओं की ओर ध्यान दिया है। उन समस्याओं का चित्रण उन्होंने अपने उपन्यासों में किया है और "निमिषा" उपन्यास भी इसके लिए अपवाद नहीं रहा है। "निमिषा" उपन्यास में उपेंद्रनाथ अश्क जी ने सामाजिक समस्याएँ, धार्मिक समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ, राजनीतिक समस्याएँ ये तीन-चार समस्याएँ प्रस्तुत की हैं। वैसे देखा जाए तो अन्य भी कई तरह की समस्याएँ समाज में होती हैं, जैसे पारिवारिक समस्या, साहित्यिक समस्या, देशद्रोह, बेइमानी, चोरी, रिश्वतखोरी आदि। लेकिन इन सभी समस्याओं को एक ही उपन्यास में प्रस्तुत करना याने उसे एक बड़ा ग्रंथ बनाना है। फिर उपन्यास का विषय बहुत ही हलका सामाजिक है जिसमें अधिकतर पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। ऐसी स्थिति में समस्याचित्रण की ओर लेखक का ध्यान न रहा तो इसमें कुछ भी बुरा नहीं है लेकिन जिन समस्याओं को उन्होंने प्रस्तुत किया है वे अत्यल्प है और उन्हें ठोस रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है। जिन समस्याओं का चित्रण लेखक ने किया है उन्हें भी लेखक ने ठोस रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसलिए समस्या चित्रण के पक्ष में उपेंद्रनाथ अश्क जी पूरी तरह से सफल हुए दिखाई नहीं देते। अगर उन्होंने एक ही मूलभूत समस्या को लेकर इस उपन्यास का चित्रण किया होता तो शायद यह और भी सफल उपन्यास बन जाता।